दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य (वैकल्पिक विषय)

टेस्ट-IV (प्रश्नपत्र-2)

8 Test

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

DTVF/19 (J-S)–M–**HL4**

Name: Devendra Prakash Meena **Mobile Number:** _____

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** *7102

Center & Date: DL & 31/07/19 **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: 1134510

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
*प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से **प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न** चुनकर किन्हीं **तीन प्रश्नों** के **उत्तर** दीजिये।*
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
*प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर **कोई अंक नहीं** मिलेंगे।*
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित गद्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके रचनात्मक सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) इस नयी सभ्यता का आधार धन है। विद्या और सेवा और कुल और जाति सब धन के सामने हेय हैं। कभी-कभी इतिहास में ऐसे अवसर आ जाते हैं, जब धन को आन्दोलन के सामने नीचा देखना पड़ता है, मगर इसे अपवाद समझिये। मैं अपनी ही बात कहती हूँ। कोई गरीब औरत दवाखाने में आ जाती है, तो घण्टों उससे बोलती तक नहीं, पर कोई महिला कार पर आ गयी, तो द्वार तक जाकर उसका स्वागत करती हूँ। और उसकी ऐसी उपासना करती हूँ, मानो साक्षात् देवी है।

प्रेमचन्द का रचनाकर्म सामाजिक विद्रूपताओं को नग्न रूप में उघाड़ता है। उनका आदर्शोन्मुखी रूप तथा प्रकाश अभ्यस्त आँखें गोदान में इसी अंधेरे को देखने की कोशिश करती हैं

उक्त पंक्तियों में मिस मालती सामन्तवाद के गिरते ढाँचे तथा पूँजीवाद के उभार को प्रकट करती है।

मालती कहती है कि भविष्य में धन का महत्त्व बढ़ने वाला है। पूँजीवाद में धन का महिमामंडन विद्या और अन्य सभी गुणों को तुच्छ साबित करेगा। वो इसका उदाहरण देते हुये कहती है कि मैं स्वयं धनी व्यक्ति को महत्त्व देती हूँ, जबकि गरीब महिला की उपेक्षा करती हूँ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष -

उक्त पंक्तियों के माध्यम से प्रेमचन्द ने 'भूख' 'मुनाफे की दुनिया' तथा मेहनत की दुनिया के मध्य विभेद को प्रकट किया है।

→ तत्कालीन समाज में उभर रही पूंजीवादी & संस्कृति तथा ढ़हते सामन्तवाद को सूक्ष्म दृष्टि से वर्णन प्रेमचन्द की वैचारिक स्पष्टता को दर्शाता है।

→ उक्त प्रघांश की भाषा (हिन्दुस्तानी शैली से युक्त है, जो सहज, सुबोध तथा पठनीय है।

प्रासंगिकता

उक्त पंक्तियाँ वर्तमान समाज की दशा और दिशा को प्रकट करती है, जहाँ धन के महिमामंडन ने 'धन को अनैतिक माध्यम से अर्जित करने पर बल दिया है। इससे भ्रष्टाचार का स्वीकरण हुआ है और आर्थिक विषमता में वृद्धि हुई है। ऑक्सफैम की रिपोर्ट में चर्चा की गई है कि भारत में असमानता पिछले 100 वर्षों में सर्वाधिक है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) लेकिन धरती माता अभी स्वर्णांचला है! गेहूँ की सुनहली बालियों से भरे हुए खेतों में पुरवैया हवा लहरें पैदा करती है। सारे गाँव के लोग खेतों में हैं। मानो सोने की नदी में, कमर-भर सुनहले पानी में सारे गाँव के लोग क्रीड़ा कर रहे हैं। सुनहली लहरें!। ताड़ के पेड़ों की पंक्तियाँ झरबेरी का जंगल, कोठी का बाग, कमल के पत्तों से भरे हुए कमला नदी के गड्ढ़े! डॉक्टर को सभी चीजें नई लगती हैं। कोयल की कूक ने डॉक्टर के दिल में कभी हूक पैदा नहीं की। किंतु खेतों में गेहूँ काटते हुए मजदूरों की 'चैती' में आधी रात को कूकनेवाली कोयल के गले की मिठास का अनुभव वह करने लगा है।

अपनी रचनाओं में फूल, शूल, धूल, गुलाब, कीचड़, चंदन, सुंदरता व कुरूपता अर्थात् सम्पूर्ण यथार्थ को बिना पूर्वाग्रह के ज्यों का त्यों प्रकट कर देना रेणु की विशेषता है।

'मैला आँचल' ~~में~~ की उक्त पंक्तियों में वे 'अंचल' की इसी विशेषताओं को प्रकट कर रहे हैं।

~~वे स्पष्ट~~ व

डॉ. प्रशांत सोचता है कि अभी भी यह धरती माता सुन्दरता से युक्त है। ग्रामीण लोग खेतों में मेहनत कर स्वर्ण जैसे अनाज का उत्पादन कर रहे हैं। प्रकृति का ऐसा सुखद अनुभव डॉक्टर के लिए नया था।

इससे पूर्व उसने गाँव के इस रूप को केवल स्वप्न में महसूस किया था किन्तु आज वह कोयल की मीठी आवाज को भी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

महसूस कर पा रहा है।

विशेष -

(अ) उक्त पंक्तियों में लेखक ने प्रकृति का सुखद वर्णन प्रस्तुत किया है, जो छायावादी काव्य में आद्यन्त उपस्थित है।

" कर रही लीला मय आनन्द,
महाचिति सजग हुई सी व्यक्त।"

(ब) लेखक इन पंक्तियों के माध्यम से ग्रामीण जीवन में व्याप्त गरीबी पर कटाक्ष करना चाह रहा है क्योंकि इतनी उपज के बावजूद वितरण की असमानता ने ऋणग्रस्तता की समस्या प्रकट की है।

(स) उक्त गद्यांश की भाषा सहज, सुबोध तथा पठनीय है, जो अपनी आंचलिकता के पुट से युक्त नहीं है।

प्रासंगिकता - वर्तमान समय में किसानों की आय में वृद्धि करने के प्रयासों तथा ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के संदर्भ में उक्त पंक्तियाँ प्रासंगिक हो

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) हमारा सृष्टि-संहार-कारक भगवान् तमोगुणजी से जन्म है। चोर, उलूक और लंपटों के हम एकमात्र जीवन हैं। पर्वतों की गुहा, शोकितों के नेत्र, मूर्खों के मस्तिष्क और खलों के चित्त में हमारा निवास है। हृदय के और प्रत्यक्ष, चारों नेत्र हमारे प्रताप से बेकाम हो जाते हैं। हमारे दो स्वरूप हैं, एक आध्यात्मिक और एक आधिभौतिक जो लोक में अज्ञान और अंधेरे के नाम से प्रसिद्ध हैं।

नवजागरण चेतना के तत्वों आत्मगौरव तथा आत्मआलोचना की प्रस्तुति भारतेन्दु के नाटकों की मूल विशेषता है।

'भारत-दुर्दशा' की इन पंक्तियों के माध्यम से लेखक ने भारत वर्ष की दुर्दशा में आंतरिक कारकों की भूमिका स्पष्ट की है।

अंधकार अपना परिचय देते हुये कहता है कि 'सृष्टि को नष्ट करने वाले भगवान ने उसे उत्पन्न किया है। जो अनैतिक कार्य करते है, वो मेरी शरण लेते हैं।

सामान्य जनसाधारण से दूर पर्वतों में, तथा मूर्खों के विचारों में मेरा निवास है। आगे वह स्पष्ट करता है कि एक रूप में वह धार्मिक अंधविश्वास के रूप में है, तो दूसरे रूप में वह प्राकृतिक रूप मे उपस्थित है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रचनात्मक सौंदर्य

(अ) भारतेन्दु ने अंधकार के माध्यम से भारत की इस दुर्दशा के आंतरिक कारणों को खोजा है। अन्यत्र वह मदिरापान, धर्म, वैचारिक स्थूलता की बुराई करते नजर आते है।

(ब) इसी तरह की नवजागरण चेतना मैथिलीशरण गुप्त की रचना भारत-भारती में भी उपस्थित है. जब वे कहते है -

" कौन थे, क्या हो गये, क्या होंगे अभी।"

(स) भाषायी क्षेत्र की स्थिति अर्थात् ब्रजभाषा का प्रयोग पद्य में तथा खड़ी बोली का प्रयोग गद्य में किया जाना इस नाटक की विशेषता है।

प्रासंगिकता

उक्त पंक्तियों में भारतेन्दु ने अज्ञानता रूपी अंधकार को प्रकट किया है, साथ ही कहा कि भारत के विनाश का कारण यही अज्ञानता है। अतः धार्मिक आडम्बर, जातिवाद, साम्प्रदायिकता जैसे वर्तमान तत्वों का परित्याग आवश्यक है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) राजनीति साहित्य नहीं है, उसमें एक-एक क्षण का महत्त्व है। कभी एक क्षण के लिये भी चूक जाएँ तो बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है। राजनीतिक जीवन की धुरी में बने रहने के लिये व्यक्ति को बहुत जागरूक रहना पड़ता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आधुनिक जीवन की समस्याओं को ऐतिहासिकता के पुट में पिरोकर प्रस्तुत करना मोहन राकेश की विशिष्टता है। 'आषाढ़ का एक दिन' इसी सत्ता और सर्जनात्मकता के संघर्ष की कहानी है।

उक्त पंक्तियों में 'प्रियंगुमंजरी' राजनीति का महत्व स्पष्ट करती हुई नजर आ रही है।

वह कहती है कि कालिदास यहाँ नहीं आ सकते क्योंकि राजनीति में प्रत्येक क्षण महत्त्वपूर्ण होता है। एक क्षण की चूक भी सत्ता परिवर्तन का कारण बन सकती है।

राजनीति में व्यक्ति को हमेशा जागरूक रहना पड़ता है। तत्कालीन सभी परिस्थितियों से उसका संबद्ध होना अतिआवश्यक है, क्योंकि कौनसी घटना किस रूप में राज्य के लिए महत्वपूर्ण है। यह राजनीति की धुरी है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

(अ) उक्त पंक्तियाँ मोहन राकेश की राजनीतिक सूक्ष्मता का परिचायक है।

(ब) इसी तरह की बातें 'मन्नू भंडारी' ने 'महाभोज' में 'दा साहब' के माध्यम से भी कहलवायी है।

(स) गद्यांश की भाषा खड़ी बोली तथा सहज एवं सुपठनीय है।

प्रासंगिकता

उक्त पंक्तियाँ वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में काफी प्रासंगिक है, जहाँ कुछ दिनों में सरकार गिर जाती है तथा नवीन सरकार का गठन हो जाता है। ऐसे में प्रत्येक क्षण की गतिविधि पर नियंत्रण महत्वपूर्ण है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) कवित्व वर्णमय चित्र है, जो स्वर्गीय भावपूर्ण संगीत गाया करता है! अन्धकार का आलोक से, असत् का सत् से, जड़ का चेतन से, और बाह्य जगत् का अन्तर्जगत् से संबंध कौन कराती है? कविता ही न!

उत्कृष्ट चिंतन तथा सूक्ष्म विश्लेषण के माध्यम से निबंध शैली को परिपक्वता प्रदान करने वाले आचार्य शुक्ल जी के निबंधों का संकलन चिंतामणि में है।

उक्त पंक्तियाँ ~~इनकी~~ उनके निबंध 'कविता क्या है' से ली गई है, जिनमें वे कविता का सम्पूर्ण जगत से संबंध स्थापित करते है।

वे स्पष्ट करते है कि कविता करना एक प्रकार का चित्र बनाने के समान है, जिसमें विभिन्न वर्णों को उसी अनुपात में दर्शाया जाता है, जिस अनुपात में चित्र में रंगों को

इस संसार में जो प्रच्छन्नता व्याप्त है, उस अंधकार के पर्दे को हटाकर मानव एवं प्रकृति में संबंध स्थापित कविता ही करती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सौंदर्य

(अ) शुक्ल जी ने स्पष्ट रूप में कहा है कि कविता का विषय मानव तक सीमित न होकर सम्पूर्ण चराचर जगत तक विस्तृत होना चाहिए।

(ब) रसों के विचार 'प्रकृति की ओर लौटें' स्पष्ट हुआ है।

(स) भाषा तत्समी खड़ी बोली है, जो सहज तथा पठनीय है।

सामयिकता

वर्तमान समय में जिस प्रकार औद्योगिकवाद का प्रभाव बढ़ रहा है। ऐसे में कविता अर्थात् ~~भावात्मक~~ भावनाओं के माध्यम से ही व्यक्ति प्रकृति से जुड़ पाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'नई कहानी' के भीतर अमरकांत के वैशिष्ट्य को 'ज़िंदगी और जोंक' कहानी के आधार पर लक्षित कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) देशकाल, वातावरण और भाषा-शिल्प की दृष्टि से मैला आँचल की समीक्षा कीजिये। 20

'मैला आँचल' एक विशिष्ट श्रेणी का उपन्यास है, क्योंकि यह स्वयं में आंचलिकता को धारण करते हुये भी राष्ट्रीयता का प्रदर्शन करता है।

रेणु ने पाठक को मैला आँचल की आंचलिकता का अनुभव कराने के लिए इस अंचल में पहले पाठक को पहुँचाने का प्रयास किया है, ताकि पाठक स्थानीयता को महसूस कर सके।

उन्होंने भौगोलिक वर्णन करते हुये मेरीगंज तक पाठक को उपस्थित किया है-

"यह है मेरीगंज! रौतहट स्टेशन से सात कोस पूरब, बूढ़ी कोसी पार करके जाना होता है।"

पाठक को गाँव पहुँचाने के पश्चात् ने अंचल के सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक जीवन का परिचय देते है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वे वहाँ के समाज में व्याप्त जातिगत प्रतिस्पर्धा को उभारते है. नारी के प्रति व्याप्त नकारात्मक प्रवृत्ति को भी उठाते है. तो साथ ही धार्मिक अंधविश्वास को भी प्रकट करते है।

सबसे महत्वपूर्ण पक्ष वे अंचल के आर्थिक जीवन को प्रस्तुत करते हुये रखते है कि - गरीबी और जहालत इस अंचल की मूल समस्या है।

राजनीतिक नासमझी तथा सिद्धांतों के विकृतीकरण को भी उन्होंने उपन्यास का हिस्सा बनाया है।

मैला आँचल की विशिष्टता इसके सांस्कृतिक वर्णन तथा भाषायी प्रयोग में है। सांस्कृतिक स्तर पर कही सुरंगा - सदाब्रिज की कथा तो कही जाट - जट्टिन खेल का आयोजन है। कही बिदापत नृत्य तो कही बीजक के मंत्रो का जाप है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

"नायक जी हो नायक जी,
खोले देहो किवड़िया हो नायक जी।"

रेणु का भाषायी प्रयोग उनकी विशिष्टता है। उन्होंने आंचलिकता का पुट देने के लिए स्थानीय शब्दों का प्रयोग किया है।

जैसे - 'गमगम'
∴ 'गमकौआ'

साथ ही ग्रामीण परिवेश में अंग्रेजी शब्द किस० तरह विकृत हो जाते है. उसका प्रत्यक्ष उदाहरण उप-यास को जीवन्त बनाता है।

उदाहरण के लिए - 'भैसचरमन' (vice chairman)
'रायबरेली' (Library)

इस प्रकार स्पष्ट है कि रेणु ने अपने उपन्यास की भूमिका को सार्थक करने का प्रयास किया है, जिसमें वे कहते है कि यह 'उप-यास आंचलिक' है साथ ही सभी पिछड़े गाँवों का प्रतिनिधित्व भी करता

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है।

रेणु ने अपनी साहित्यिक परिपक्वता को स्पष्ट करते हुये किसी पूर्वाग्रह के बिना 'मैला आँचल' मे वास्तविक यथार्थ को प्रकट किया है।

'गोदान' की भाँति यह उपन्यास भी ग्रामीण जीवन की सभी समस्याओं को प्रकट करता है। अन्तर सिर्फ इतना है कि गोदान में मैक्रोस्कोपिक दृष्टिकोण है, जबकि मैला आँचल में ~~था~~ माइक्रोस्कोपिक।

देशकाल, वातावरण तथा आंचलिक तत्व इस उपन्यास की राष्ट्रीयता में बाधक नहीं अपितु इसे अधिक जीवन्त बनाते है। उपन्यास की जीवन्तता इसे वर्तमान में भी प्रासंगिक बनाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'भोलाराम का जीव' कहानी स्वातंत्र्योत्तर भारत की कार्यपालिका में व्याप्त भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करती है।' - विवेचन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

'भोलाराम का जीव' कहानी में हरिशंकर परसाई ने तत्कालीन स्वतंत्रता आन्दोलन के पश्चात् मोह भंग की स्थिति को प्रकट किया है।

'भोलाराम का जीव' उस वर्ग को संबोधित करता है, जो स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सब-कुछ सही हो जाने की उम्मीद करता है किन्तु उसके हाथ मोहभंग के सिवा कुछ प्राप्त नहीं होता।

'भोलाराम का जीव' प्रशासनिक उदासीनता का शिकार है, जो ग्रामीण अज्ञानता तथा प्रशासनिक अभिजात्यता का परिणाम थी।

इसी प्रशासनिक शून्य को मन्नू भंडारी ने महाभोज में तथा मुक्तिबोध ने 'अंधेरे में' में प्रकट किया है।

यह प्रशासनिक शून्यता स्वतंत्रता के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सिद्धांतों को धता बताते हुये जन कल्याण की बजाय स्व कल्याण के आग्रह से युक्त है।

'भोलाराम का जीव' उस वर्ग को प्रकट करता है, जो अपने हक की प्राप्ति के लिए भी भ्रष्टाचार के हाथों पीड़ित है। यह भ्रष्टाचार इतना अधिक सघन और विराट है कि व्यक्ति के जीवन के पश्चात् भी उसका पीछा नहीं छोड़ता।

चूँकि प्रशासनिक अभिजात्यता की प्रवृत्ति तत्कालीन नौकरशाही में विद्यमान थी, जो उन्हें सेवक की बजाय स्वामी के रूप में स्थापित करती थी।

'भोलाराम ~~का जीव~~' इसी अभिवृत्ति का शिकार हुआ, और अपनी पेंशन पाने के लिए भ्रष्टाचार की राशि नहीं दे पाने के कारण पेंशन से वंचित रहा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

साथ ही लेखक ने अन्य क्षेत्रों में व्याप्त भ्रष्टाचार को भी प्रकट किया है, जो रेलवे में पार्सल चोरी आदि के रूप में उपस्थित है।

सारांशतः कहा जा सकता है कि उक्त कहानी तत्कालीन प्रशासनिक विद्रूपता को नग्न रूप में उजागर करती है। जिसका प्रभाव वर्तमान में भी देखा जा सकता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'कविता क्या है' निबंध के आधार पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल की काव्य-दृष्टि पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के निबंध उत्कृष्ट चिंतन, सूक्ष्म विश्लेषण तथा तर्कपूर्ण विवेचन से पुक्त है।

'कविता क्या है' निबंध में उन्होंने कविता तथा जगत के मध्य संबंध स्थापित करने के साथ काव्य के प्रतिमान को भी स्पष्ट किया है।

वे काव्य की भाषा के संबंध में विचार प्रकट करते हुये कहते है कि इसमें बिम्बात्मक भी होनी चाहिए।

> " काव्य में केवल अर्थग्रहण ही नहीं, बिम्बग्रहण भी अपेक्षित है।"

भाषा के संबंध में उनका विचार यह भी है कि व्यक्ति के नामसूचक ~~शब्द~~ संबोधन की बजाय गुणबोधक संबोधन का प्रयोग किया जाना चाहिए। नाद सौंदर्य तथा प्रासंगिकता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को भी भाषा का महत्वपूर्ण गुण मानते है।

अलंकार के संबंध में उनका मानना है कि अलंकार काव्य को सौंदर्य प्रदान करते है किन्तु अलंकारों का प्रयोग सधा हुआ होना चाहिए। अति की स्थिति में सूरदास की आलोचना भी करते हुये नजर आते है।

"जिस प्रकार सुन्दर आभूषण स्त्री की शोभा बढ़ाते है, उसी तरह अलंकार काव्य की।"

उक्ति वैचित्र्य के संबंध में उनका मानना है कि थोड़ी वक्रता होनी चाहिए क्योंकि यह पाठक को जिज्ञासु बनाती है। उन्होंने भावप्रेरित वक्रता का समर्थन किया। जैसे- सूरदास की गोपियों की वाग्विदग्धता। ~~किन्तु~~

किन्तु उन्होंने बुद्धिप्रेरित वक्रता की कठोर आलोचना करते हुये उसे कविता के लिए खतरा बताया है। जैसे - रीतिकालीन

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कवियों की वक्रता ;

इसके अतिरिक्त वे कविता के विषय को सम्पूर्ण चराचर जगत तक विस्तृत मानते है।

आचार्य शुक्ल के अनुसार कविता ही व्यक्ति पर बाह्य आवरण को हटाती है तथा प्रकृति से जोड़ती है -

" जैसे - जैसे प्रच्छन्नता बढ़ती जायेगी, कवि का कार्य बढ़ता जायेगा।"

कविता व्यक्ति को अपनत्व का अनुभव कराते हुये भावनाओं से जोड़ती है, जो वर्तमान समय की आवश्यकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित गद्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके रचनात्मक सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) उसकी आंखें बन्द हो गयीं और जीवन की सारी स्मृतियाँ सजीव हो-होकर हृदय-पट पर आने लगीं, लेकिन बे-क्रम, आगे की पीछे, पीछे की आगे, स्वप्न-चित्रों की भाँति बेमेल, विकृत और असम्बद्ध। वह सुखद बालपन आया, जब वह गुल्लियाँ खेलता था और माँ की गोद में सोता था। फिर देखा, जैसे गोबर आया है और उसके पैरों में गिर रहा है। फिर दृश्य बदला, धनिया दुलहिन बनी हुई, लाल चुंदरी पहने उसको भोजन करा रही थी। फिर एक गाय का चित्र सामने आया, बिल्कुल कामधेनु-सी। उसने उसका दूध दुहा और मंगल को पिला रहा था कि गाय एक देवी बन गयी और...।

किसान जीवन का चित्र खींचकर उसे साहित्य का हिस्सा बनाने वाले प्रेमचन्द ने सामाजिक जीवन को अपने साहित्य में प्रकट किया है।

'गोदान' में होरी के माध्यम से वे किसान जीवन के शोषण के स्वरूप को उभारने का प्रयास करते है।

उक्त पंक्तियाँ 'गोदान' के अंतिम हिस्से से ली गई है, जिनमें होरी जीवन-संघर्ष से हारकर असीम शांति में समाना चाहता है।

भले ही उसका जीवन अटूट यंत्रणा से युक्त रहा हो किन्तु उसकी स्मृतियों में सुखद अनुभव उपस्थित है। वह अपने अंतिम समय में अपने दुखों की बजाय सुख को

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

याद कर अपने अंत को सुखद बनाना चाह रहा है।

विशेष

(अ) उक्त पंक्तियों में प्रेमचन्द की पुकाश अभ्यस्त आंखे, नग्न अंधेरे को देखने की कोशिश कर रही है।

(ब) उक्त पंक्तियाँ ~~की~~ किसान की अदम्य ~~जिजी~~ जिजीविषा को प्रकट करती है, जो सभी यंत्रणाओं के बावजूद खुश रहता है।

(स) गधांश की भाषा हिन्दुस्तानी शैली में खड़ी बोली है, जो ~~स~~ सहज और पठनीय है।

प्रासंगिकता - होरी का इस तरह त्रासद अन्त किसानों की वर्तमान समस्याओं को भी प्रकट करता है, क्योंकि वर्तमान समय में भी किसान होरी की ~~भांति~~ भाँति 'गाय रूपी कामधेनु' की इच्छा को दमित करने को मजबूर है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) आर्य ! जो तुमसे भय करता है, उससे तुम भी भय करते हो। शक्तिमान का भय सुषुप्त है, शक्तिहीन का जागरित। भय का कारण होने से भय अवश्य होगा। निर्भय वही है, जो भय के कारणों से मुक्त है। तुम्हारी शक्ति से यदि दूसरा भयभीत है तो उसका भयभीत रहना तुम्हारे भय का गुप्त बीज है। अनुकूल भूमि और ऋतु पाने से भय का यह बीज किसी भी समय अंकुरित हो सकता है। आर्य, ऐसी अवस्था में शक्ति अभय का नहीं, भय का ही कारण है। अन्य के भय का और अपने भय का भी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

छायावादी प्लेटोनिक प्रेम, राष्ट्रीय चेतना तथा 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो' का भाव जयशंकर प्रसाद की रचनाओं के मूल में है।

B स्कन्दगुप्त की उक्त पंक्तियों के माध्यम से लेखक भय को दूर करने की प्रेरणा देता है।

~~लेखक~~

मार्क्सवादी विचारधारा के स्थूल प्रक्षेपण से बचते हुये ऐतिहासिक समस्याओं की निरन्तरता की खोज यशपाल कृत 'दिव्या' में उपस्थित है।

उक्त पंक्तियों में स्थविर चीवुक पृथुसेन को रूद्रधीर से भयभीत नहीं होने की प्रेरणा देते हैं।

स्थविर चीवुक उसे समझाते हुये कहते हैं कि जो डर का मूल कारण है, उसे ही

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समाप्त करना वास्तविक विजय है। यदि तुम अपने डर के कारण को जीत नहीं सकते तो वह हमेशा इसी तरह तुम्हारे साथ रहेगा।

विशेष

→ बौद्ध दर्शन के माध्यम से यशपाल ने मार्क्सवादी विचारधारा का प्रक्षेपण किया है

→ भय के मूल कारण को जीतकर ही कोई व्यक्ति जीवन में आगे बढ़ सकता है।

→ गद्यांश की भाषा ऐतिहासिक आवरण के कारण तत्समी खड़ी बोली है किन्तु पठनीय है।

→ उक्त पंक्तियाँ वर्तमान में भी पर्याप्त प्रासंगिक है, जहाँ व्यक्ति अपने को पहचाने बिना अपने विश्वास और अपने रचित विधान से डरता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) इसे ले तो जा रहा हूँ, पर इतना कहे देता हूँ, आप भी समझा दें उसे- कि रहना हो तो दासी बनकर रहे। न दूध की, न पूत की। हमारे कौन काम की, पर हाँ, औरतिया की सेवा करे, उसका बच्चा खिलावे, झाड़ू, बुहारु करे तो दो रोटी खाय, पड़ी रहे। पर कभी उससे ज़बान लड़ायी तो खैर नहीं। हमारा हाथ बड़ा ज़ालिम है। एक बार कूबड़ निकला, तो अगली बार प्रान ही निकलेगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्त्री- पुरुष टकराहट को प्रस्तुत करती धर्मवीर भारती की गुलकी बन्नो तत्कालीन समय की समस्या को दर्शाती है, जो राजेन्द्र यादव के संकलन एक दुनिया समानान्तर में संकलित है।

उसका पति उसे एक पत्नी की भाँति अधिकार देने से मना करते हुये कहता है कि वह उसे केवल आजीविका के लिए रोटी एवं आश्रय दे सकता है, किन्तु अधिकार नहीं।

उसे उसकी दूसरी पत्नी की सेवा के बदले भोजन तथा आश्रय की प्राप्ति होगी। यदि वह कोई गलती करेगी तो पहले की भाँति उसे घर से बेदखल करने की बजाय वह उसके प्राण ले लेगा।

निष्कर्ष

(अ) इन पंक्तियों के माध्यम से समाज में

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

नारी के प्रति की जा रही शोषण की परम्परा का चित्रण है।

(ब) धर्मवीर भारती ने संवैधानिक मूल्यों के हनन को इसमें उठाया है क्योंकि तत्कालीन लेखक मोहभंग की स्थिति में वास्तविक यथार्थ को प्रकट कर रहे थे।

(स) पद्यांश की भाषा सहज एवं स्पष्ट है।

प्रासंगिकता

उक्त पंक्तियाँ वर्तमान ग्रामीण परिवेश में नारी की पुरुष पर निर्भरता को दर्शाती है. जहाँ नारी अज्ञानता के अभाव में शोषण के विरुद्ध आवाज नहीं उठा पाती।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) तुम मेरे सम्पूर्ण जीवन के प्रयत्नों को, अपने वंश के भविष्य को एक युवती के मोह में नष्ट कर देना चाहते हो! महापण्डित चाणक्य ने कहा है, "आत्मनं सततं रक्षेत दारैरपि धनैरपि।" पुत्र, स्त्री भोग्य है। मति-भ्रम होने पर मोह में पुरुष स्त्री के लिये बलिदान होने लगता है। वत्स, ऐसी ही परिस्थिति में नीतिज्ञ महत्त्वाकांक्षी और परलोककामी पुरुष के लिये नारी को पतन का द्वार कहते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उक्त पंक्तियाँ प्रगतिवादी विचारधारा के लेखक यशपाल के उपन्यास दिव्या से ली गई है।

इस उपन्यास में नारी तथा बिछड़े वर्गों द्वारा झेली जा रही समस्याओं को अंकित किया है। उक्त पंक्तियों में प्रेस्थ अपने पुत्र पृषुसेन को समझा रहा है।

प्रेस्थ कहता है कि स्त्री जीवन की पूर्ति नहीं, जीवन की पूर्ति में एक साधन मात्र है। अतः पुत्र तुम इस स्त्री के मोह में पड़कर मेरे जीवन भर की कमाई को नष्ट मत करो।

स्त्री को भोग्या बताते हुये वह कहता है कि मति भ्रम की स्थिति ही मनुष्य को स्त्री के प्रति आकर्षित करती है। अतः तुम इस विनाश मार्ग से दूर रहो।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रश्न 8

(अ) उक्त पंक्तियाँ भारतीय परम्परा में नारी को निर्वाण में बाधक मानने की नकारात्मक सोच का परिणाम है, जो सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, कबीर तथा तुलसी के साहित्य में भी उपस्थित है।

" नारी की झाँई पड़त, अंधा होत भुजंग।"
(कबीर)

" ढोल, गवार, शूद्र, पशु, नारी
सकल ताड़ना के अधिकारी. (तुलसी)

(ब) सभी धार्मिक ग्रंथों तथा महान व्यक्तित्वों के उदाहरणों को विकृत रूप में प्रस्तुत कर इस प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया जाता रहा है।

(ग) मार्क्सवादी विचारों का प्रक्षेपण हुआ है, जो वर्ग तथा लैंगिक समानता का पक्षधर है।

(घ) भाषा सहज तथा पठनीय है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) सुख और दुख अन्योन्याश्रय हैं। उनका अस्तित्व केवल विचार और अनुभूति के विश्वास में है। इच्छा ही सर्वावस्था में दुख का मूल है। एक इच्छा की पूर्ति दूसरी इच्छा को जन्म देती है। वास्तविक सुख इच्छा की पूर्ति में नहीं, इच्छा से निवृत्ति में है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

ऐतिहासिक वातावरण ~~के~~ काल्पनिक चित्र में यथार्थ को प्रकट करना यशपाल के उपन्यास दिव्या का मूल भाव है।

उक्त पंक्तियों में माक्रिश सुख तथा दुख की आपसी संबद्धता को दर्शाता है।

माक्रिश कहता है कि सुख तथा दुख एक दूसरे के पूरक की भाँति है, क्योंकि एक की उपस्थिति में दूसरे का अनुभव नहीं होता है। इनका अस्तित्व केवल वैचारिक स्तर पर है।

यदि हम विचार के माध्यम से किसी चीज की इच्छा करते है, और उसकी अपाप्ति हमें दुख का कारण प्रदान करेगी। इसलिए इच्छा सुख को त्यागकर ही हम सुख-दुख के चक्र से मुक्त हो सकते है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

विशेष

(अ) बौद्ध दर्शन 'प्रतीत्यसमुत्पाद' को प्रकट किया गया है।

(ब) प्रसाद ने भी अपने नाटक स्कन्दगुप्त में इसी बात को स्पष्ट करते हुये देवसेना के माध्यम से कहलवाया है-

"सभी सुखों क्षणिक सुखों का अंत है ××× अतः सुख करना ही नहीं चाहिए।

(स) वर्तमान में भौतिकतावादी संस्कृति के प्रभाव में लगातार इच्छाओं का पैदा होना तथा उनका दमन करना दुख का कारण है। अतः आवश्यकता है कि स्वयं पर नियंत्रण किया जाये।

(द) भाषा सहज, सरल, सुपाठ्य है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'गोदान' भारतीय किसान के पूरे जीवन-संघर्ष और इसमें उसके पराभव की करुण गाथा है।' इस कथन के संदर्भ में 'गोदान' का विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गोदान मुंशी प्रेमचन्द का एक महाकाव्यात्मक उपन्यास है, क्योंकि इसमें किसान जीवन का यथार्थवादी चित्रण उकेरा गया है।

प्रेमचन्द ने उपन्यास के आरंभ से ही किसानों के संघर्ष को स्पष्ट किया है, जब होरी तथा धनिया वार्तालाप करते हुये कहते है कि उनके पुत्रों की मौत दवा के अभाव में हुई थी

आगे प्रेमचन्द धीरे-धीरे सामन्ती शोषण की तह खोलते हुये किसानों के शोषण के विकारल रूप को प्रकट करते है। जहाँ धर्म तथा जाति के नाम पर पंचो द्वारा उस पक्ष पर दंड लगाया जाता है।

धीरे-धीरे प्रेमचन्द ने शोषण के कारणों की खोज की तथा साहूकारों द्वारा अधिक ब्याज पर ऋण देना, किसानो की अज्ञानता उनकी ऋणग्रस्तता का कारण बनती है।

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेमचन्द ने स्पष्ट किया है कि किसानों के पास पर्याप्त मात्रा में उपज होती है किन्तु जिस व्यवस्था की चर्चा 'मैथिलीशरण गुप्त' ने भारत-भारती में 'आता महाजन के यहाँ सारा अन्न अंत में' तथा रेणु ने मैला आँचल में खम्हार चक्र में की है वही यहाँ उपस्थित है।

यह सामन्ती शोषण इतना अधिक जटिल है कि एक किसान जो अदम्य की जिजीविषा रखता है, वह भी हार मानने लगा है। आर्थिक विषमता का यह चक्र 'असमान वितरण' की देन है। प्रेमचन्द ने लिखा है-

"होरी की दशा दिन-दिन गिर रही थी। जीवन संघर्ष में सदा उसकी हार हुई थी, पर उसने इसे कभी स्वीकार नहीं किया।"

किसानों का पराभव न केवल सामन्ती

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

शोषण बल्कि धर्म तथा जाति व्यवस्था के आधार पर भी होता है। यह शोषण इतना जटिल है कि 'गाय की इच्छा' जीवन भर की मेहनत के बाद भी इच्छा ही रह जाती है और धार्मिक आडम्बर उससे गोदान की मांग करते हैं।

किसान के पराभव का एक अन्य कारण स्पष्ट करते हुये प्रेमचन्द ने मेहनत की दुनिया के समानान्तर चलने वाली मुनाफे की दुनिया का भी चित्र खींचा है, जो अन्ततः किसानों के शोषण से ही संचालित है -

> "यहाँ जो किसान है, वह सबका नरम चारा है। पटवारी को दस्तूरी न दे तो गाँव में रहना मुश्किल।"

इस प्रकार प्रेमचन्द ने गोदान में किसानों के शोषण के सम्पूर्ण चक्र को प्रकट किया है किन्तु वे इस शोषण के पीछे खुद

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किसानों के मनोविज्ञान को भी दोषी मानते है क्योंकि गोदान में होरी खेती को मरजाद मानता है साथ ही जात-बिरादरी का चाकर समझता है।

• किन्तु साथ प्रेमचन्द ने समाधान का संकेत करते हुये गोबर के माध्यम से सामन्तवादी तत्वों का ढहने का संकेत किया है। जहाँ वह धर्म तथा जात-बिरादरी को नकार देता है तथा मजदूरी को अपना लेता है।

सारांशतः कहा जा सकता है कि गोदान न केवल प्रेमचन्द के समय की बल्कि वर्तमान समय में भी किसान संघर्ष तथा पराभव की कहानी है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

![Drishti The Vision logo]

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) क्या 'दिव्या' उपन्यास में यशपाल मार्क्सवादी विचारधारा को प्रक्षेपित करने में सफल हुए हैं? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

यशपाल घोषित तौर पर मार्क्सवादी विचारधारा के लेखक है। अत: स्वाभाविक है कि उनकी रचनाओं में मार्क्सवाद का प्रभाव नजर आता है

किन्तु दिव्या में उन्होंने मार्क्सवाद का स्थूल प्रक्षेपण नहीं किया है बल्कि ऐतिहासिक वातावरण का ध्यान रखते हुये बौद्ध तथा चार्वाक दर्शन के माध्यम से अपने विचारों को पुष्ट किया है।

दिव्या में मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव मारिश द्वारा 'पारलौकिकता के खंडन' तथा इहलोकवाद तथा मानव के महत्व को स्थापित करने में है.

" जिस स्थूल तथा प्रत्यक्ष जगत का अनुभव सम्पूर्ण जगत करता है ~~उसि~~ उसे मिथ्या मानना तथा जिस ब्रह्म

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तथा परमात्मा की कल्पना केवल ब्रह्मवादी करतौ है, उसे सत्य मानना कहा तक उचित है।"

मार्क्सवाद एक ऐसा दर्शन है, जो समता-मूलक समाज की स्थापना पर बल देता है। यशपाल ने तत्कालीन समाज में व्याप्त विभिन्न असमानताओं पर चोट की है। उन्होंने मारिशा के माध्यम से नारी को त्याज्य मानने की भावना का विरोध करते हुये समता की बात की है।

उन्होंने राज्य की शोषणकारी प्रवृत्ति को भी दिव्या में प्रकट किया है, जब महाश्रेष्ठी कहता है कि राज्य उसके व्यापार का श्रेष्ठांश ले लेता है।

न्याय पर राज्य के नियंत्रण को भी उन्होंने धर्मस्थ के माध्यम से प्रकट किया है। वर्णव्यवस्था के कारण जो असमानता प्रकट होती है, उसे भी पृथुसेन के माध्यम

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

से स्पष्ट किया है।

मार्क्सवाद की विचारधारा 'ऐतिहास की अवधारणा' अर्थात् मानव द्वारा परिस्थितियों को बदल देना भी 'दिव्या' के माध्यम से स्पष्ट किया है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि उन्होंने 'दिव्या' में मार्क्सवादी विचारधारा को पकड़ किया है किन्तु कुछ तत्व मार्क्सवादी विचारधारा के प्रतिकूल नजर आते है-

(क) प्रेरणा का वर्ग चेतना से दूर होना।

(ख) रुद्रधीर का राजा बन जाना।

(ग) पृथुसेन का संन्यासी बनना।

सारांशतः कहा जा सकता है कि यशपाल अपनी मार्क्सवादी विचारधारा के स्थूल प्रक्षेपण से बचते हुये काल्पनिक चित्र में यथार्थ का रंग भरने में सफल हुये है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'धर्मवीर भारती की कहानी 'गुलकी बन्नो' भारतीय समाज में नारी की दयनीय स्थिति का यथार्थपूर्ण और तल्ख चित्रण करती है।' विवेचन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

'धर्मवीर भारती' की कहानी 'गुलकी बन्नो' उस समय का प्रतिनिधित्व करती है, जब संवैधानिक उपबंधों के बावजूद नारी का शोषण जारी है। लेखक ने कहानी में इसी मोहभंग को स्पष्ट किया है।

'गुलकी बन्नो' एक विशिष्ट चरित्र न होकर वर्गगत चरित्र का प्रतिनिधित्व करती है, जिसका पति उसे घर से निकाल देता है।

ग्रामीण परिवेश में अधिकांश महिलाएँ इसी अज्ञानता के कारण अभिशप्त जीवन जीने को मजबूर है। गुलकी बन्नो की यह दशा पितृसत्तात्मक समाज की देन है।

चूंकि सभी स्त्रीवर्ग मूलतः पितृसत्तात्मक समाज के कारण पुरुष पर आर्थिक रूप से निर्भर रहती है। इसी निर्भरता के कारण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पुरुषों द्वारा उनका शोषण किया जाता है।

नई कहानी के दौर में 'सामान' कहानी भी पुरुष की इसी वर्चस्वता को प्रकट करती है, जहाँ पत्नी द्वारा किसी वस्तु के छूट जाने पर भयंकर मानसिक पीड़ा झेली है।

'गुलकी बन्नो' इसी मानसिक पीड़ा को झेलने को मजबूर है क्योंकि पति के बिना समाज भी उसे स्वीकार नहीं कर रहा। पति उसे लेने आता है किन्तु उसे अधिकार विहीन रखना चाहता है -

"इसे ले तो जा रहा हूँ, पर इतना कहे देता हूँ × × × कि दासी बनकर रहे।"

स्त्री की इसी अज्ञानता, सामाजिक बंधन तथा पुरुष पर निर्भरता ने उसे एक वस्तु की तरह बना दिया है। जहाँ उसे न चाहते हुये भी अपनी सपत्नी के साथ रहने

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को विवश है।

'गुलकी बन्नो' की स्थिति तत्कालीन समय ही नहीं बल्कि वर्तमान ग्रामीण परिवेश को भी प्रकट करती है। जहाँ आज भी सामाजिक रीति रिवाज महिला को डायन कहकर हत्या कर देते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि 'गुलकी बन्नो' समाज के उस नग्न अंधेरे को दर्शाती है, जो सम्पूर्ण पराभव झेलने वाली महिला को प्रतिबिम्बित करती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'तुलसी साहित्य के सामंत-विरोधी मूल्य' निबंध के आधार पर गोस्वामी तुलसीदास के रचनाकर्म के प्रति डॉ. रामविलास शर्मा के मत की उपस्थापना कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

डॉ. रामविलास शर्मा ने अपने निबंध 'तुलसी साहित्य के सामन्त विरोधी मूल्य' में तुलसीदास के साहित्य का सूक्ष्म विश्लेषण प्रस्तुत करते हुये उन्हें प्रगतिशील से कवि के रूप में स्थापित किया है।

वस्तुतः तुलसी के साहित्य में वर्ण-व्यवस्था, नारी तथा निम्न वर्ग के प्रति कही गई बातों ने उनकी छवि में एक दाग की भाँति कार्य किया है। ~~वे कटते हैं~~

किन्तु डॉ. रामविलास शर्मा ने इसे नकारते हुये स्पष्ट तथा तर्कपूर्ण विवेचन प्रस्तुत किया है -

(क) जाति व्यवस्था को समर्थित करने वाले विचारों के संबंध में उन्होंने कहा है कि तुलसी स्वयं इस पीड़ा को झेल रहे थे -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"धूत कहौ, अवधूत कहौ,
राजपूत कहौ, जुलाहा कहौ कोऊ।"

डॉ. रामविलास शर्मा ने जातिव्यवस्था से संबंधित विचारों को साहित्य से छेड़छाड़ के रूप में स्पष्ट किया है. उनका मानना है कि यह कार्य उन लोगों का है. जो वर्षों से ऐसा करते आ रहे थे।

(ब) नारी के संबंध में तुलसी के विचार उन्होंने स्पष्ट करते हुये कहा कि -

"पराधीन सपनेहुं सुख नाही।"

ये पंक्तियाँ सामाजिक व्यवस्था में नारी के शोषण को स्पष्ट करते हुये तुलसी की संवेदना को दर्शाती है।

(स) डॉ. रामविलास शर्मा ने निम्नवर्ग के प्रति तुलसी की सहृदयता प्रकट की है। वे लिखते हैं कि -

"जिस मुगल काल में इन दोहा-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

किरीटों का आखेट होता था, जो जिन्दा पकड़ लिये जाते थे, उन्हें बेच दिया जाता था।"

इस समय तुलसी ने उन्हें समाज में महत्त्व प्रदान किया। उन्होंने इनके लिए 'भरत सम भ्राता' शब्द का प्रयोग किया है।

(द) साम्प्रदायिकता से तुलसी कोसों दूर थे, क्योंकि उनके राम 'गरीबनवाज' थे।

(य) तुलसी साहित्य का महत्त्व तत्कालीन यथार्थ का चित्रण प्रस्तुत करने में है, जब वे अकाल जैसी समस्याओं को पहली बार साहित्य का हिस्सा बनाते हैं। तुलसी ने लिखा है -

"कलि बारह ही बार दुकाल पड़ै,
बिनु अन्न दुखी सब लोग मरै।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इस प्रकार स्पष्ट है कि तुलसी का साहित्य पर्याप्त मात्रा में प्रगतिशीलता से युक्त है। उस पर लगाये गये आक्षेप उचित नहीं है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रेमचंद की कहानी 'सद्गति' दलित-प्रश्न को उठाने में कहाँ तक सफल सिद्ध हुई है? विवेचनात्मक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अच्छा लेखक वह नहीं जो स्वघटित यथार्थ को प्रकट करे, बल्कि वह है, जो परघटित यथार्थ को साहित्य का हिस्सा बनाकर मार्मिकता से युक्त करे।

प्रेमचन्द इसी तरह के सूक्ष्मद्रष्टा लेखक है, जो समाज के यथार्थ को नग्न रूप में प्रकट करने के साथ प्रगतिशीलता से भी युक्त है।

1930 के दौर में जब डॉ. भीमराव अंबेडकर तथा गांधी के नेतृत्व में दलित समाज एक ऐतिहासिक करवट ले रहा था, तब प्रेमचन्द ने साहित्य के माध्यम से अपना योगदान दिया।

उन्होंने अपनी कहानी सद्गति में न केवल दलित शोषण के कारणों की खोज की है बल्कि दलितों में व्याप्त हीनता ग्रंथि की समाप्ति के लिए एक चेतना का प्रवाह

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भी किया है।

चूंकि दलित वर्ग धार्मिक आडम्बरों तथा सामाजिक शोषण के कारण एक हीनता बोध से ग्रस्त था, जो अपने खिलाफ हो रहे शोषण के प्रति आवाज नहीं उठा पाता था।

इसी समय प्रेमचन्द ने दलित वर्ग में चेतना का संचार करते हुये शोषण के प्रति आवाज उठाने को दर्शाया।

" उधर गौंड ने चमरौंने में जाकर कह दिया, खबरदार जो मुर्दा उठाने गये। अभी पुलिस तहकीकात होगी।"

अर्थात् यह दलित वर्ग अब पहले की भांति सब कुछ सहने की बजाय आवाज उठाना, तथा अधिकारों के प्रति जागरूक था।

अतः प्रेमचन्द ने दलित चेतना को पर्याप्त रूप में उठाने का प्रयास किया है किन्तु

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

यदि सूक्ष्मता से देखा जाये तो यह दलित-प्रश्न केवल शोषण तक ही सीमित है क्योंकि पुलिस तहकीकात से पूर्व ही कहानी को समाप्त कर देना तथा अपराधियों को सजा न मिलना इस दलित चेतना की सीमा है।

किन्तु तत्कालीन समय में इस तरह के प्रसंग को उठाना ही अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अतः सारांशतः कहा जा सकता है कि प्रेमचंद की कहानी 'सद्गति' दलित-प्रश्न को उठाने में सफल रही है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'स्कंदगुप्त' नाटक के नामकरण पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किसी रचना का नामकरण वह प्रतीक है, जो उस रचना के सम्पूर्ण प्रतिपाद्य को प्रतिबिम्बित करता है।

ऐसे में उचित नामकरण की कसौटियों का होना आवश्यक है। चूंकि प्रश्न यह है कि रचना का नाम स्कन्दगुप्त क्यों है? क्या कोई और नाम नहीं हो सकता है था।

इस संदर्भ में सर्वप्रथम चर्चा की जाये कि स्कन्दगुप्त नामकरण ही क्यों रखा-

(क) यह संक्षिप्त, आकर्षक है।

(ख) प्रसाद एक स्वच्छंदतावादी रचनाकार है, जो व्यक्ति को विशेष महत्व देते है। ऐसे में नाटक का ~~व्यक्ति~~ चरित्र प्रधान होना अपेक्षित भी है।

(ग) प्रसाद की रचनाओं का मूल उद्देश्य तत्कालीन स्वतंत्रता आन्दोलन में एक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर राष्ट्रीय चेतना के प्रसार करना था। ऐसे में स्कन्दगुप्त एक ऐसा चरित्र है, जो राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व कर्ता हो सकता है क्योंकि उसे राज्य का मोह नहीं।

तत्कालीन समय में राष्ट्रीय नेतृत्वकर्ता के इसी अनुरूप होने की आशा व्यक्त करते हुये स्कन्दगुप्त को प्रभावी भूमिका दी गई है।

(घ) प्रसाद अपने नाटकों के माध्यम से अपनी विचारधारा तथा दर्शन को प्रसारित करते हैं। इस नाटक में उन्होंने आनन्दवाद अर्थात् प्रत्यभिज्ञा दर्शन का प्रभाव पैदा करने के लिए स्कन्दगुप्त का प्रयोग किया है।

स्कन्दगुप्त को पापों से सम्पूर्ण विस्मृति तथा बौद्धों का निर्वाण चाहिए। उसे अधिकार सुख मादक व

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सारहीन लगता है।

अब बात की जाये कि यदि स्कन्दगुप्त नाम न रखते तो क्या रख सकते थे। ऐसे में देवसेना, दूतों पर विजय जैसे विकल्प उपलब्ध थे किन्तु राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़ाव नहीं हो पाता।

अतः स्पष्ट है कि स्कन्दगुप्त नामकरण सर्वाधिक सटीक है, जो परिस्थितियों, पाठक तथा लेखक तीनों की जिज्ञासाओं को पूर्ण करता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) 'अपने उपन्यासों एवं कहानियों में प्रेमचंद की बुनियादी चिन्ताएँ अपने समय की भी हैं और भविष्य की भी हैं।' इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation